वेदों में वैज्ञानिक तथ्य
(सामवेद समीक्षा)

साम- समीक्षा :-

साम गान के पाँच भाग हैं -

हिंकार, प्रस्ताव , उद्गीथ, प्रतिहार और निधन।

इसमें प्रथम तीन वर्तमान काल के स्थायी अन्तरा और आभोग के अभिव्यञ्जक हैं। निधन से तान की सूचना मिलती है। स्टेंगवे ने - '' हिन्दुस्तान आफ म्युजिक में उधृत किया है कि उदात्त आरोह का अनुदात्त अवरोह का स्वरित स्थायी का सूचक है।

सामगान सोमरस के अभिषव करते समय तथा चन्द्रलोक में निवास करने वाले पूर्वजों की पूजा के समय विशेषतया गाया जाता था। महाभारत के शान्ति पर्व में स्पष्ट उधृत है कि भीष्म की शवदाह क्रिया के समय सामगान गाया गया था। सामगान के समय तीन वादन यन्त्र थे दुन्दुभि, वेणु, वीणा।

सामवेद का उपवेद गन्धर्व वेद है जिससे सोलह (१६) हजार राग, रागनियों का निर्माण हुआ। वाद्य और नृत्य का मूल भी गन्धर्व वेद ही है।

सामगान स्वर व लौकिक स्वर में भी पर्याप्त साम्य मिलता है। सामगान स्वर का अनुक्रम- मध्यम (म) गान्धार (ग) ऋषभ (रे) षड्ज (स) धैवत (ध) निषाद (नि) और पञ्चम (प) है। जो साम गान में क्रमशः क्रुष्ट प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वार्य नाम से अभिहित है। सामगान का प्रथम स्वर क्रुष्ट होने से साम स्वर क्रुष्टादि कहलाते हैं।

तैत्तिरीय प्रातिशाख्य में साम स्वर का दूसरा नाम यमा भी निर्दिष्ट है। साम स्वर के विपरीत लौकिक गान का स्वर क्रम षड्ज (स) ऋषभ (रे) गान्धार (ग) मध्यम (म) पंचम (प) धैवत (ध) और निषाद (नि) है।

स, रे, ग, म, प, ध, नि

सामगान में उपरिनिर्दिष्ट चिन्ह १,२,३,४,५,६,७ क्रमशः क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र, और अतिस्वार्य अथवा म, ग, रे, स, ध, नि, प के द्योतक हैं ''न'' यह चिन्ह श्रुति का द्योतक है।

सामगान में ५ अंक तक का उपयोग अत्याधिक है। ६ और ७ अंक का उपयोग अत्यन्त साम गान में प्राप्त होता है।

षड्जादि सप्त स्वरों का अन्तर्भाव उदात्तादि त्रयस्वर में भी है। उदात्त स्वर में निषाद और गान्धार स्वर का अनुदात्त स्वर में ऋषभ और धैवत स्वर तथा स्वरित स्वर में षडज, पंचम, और मध्यम स्वर का अन्तर्भाव होता है।

साम गान में 'सप्त स्वरों ' का प्रयोग अवरोह क्रम से होता है , जिससे मन को शान्ति प्राप्त होती है।

परन्तु आधुनिक गान में स्वर निम्न गति से उच्च गति को प्राप्त होता है , जिससे मन शान्त होने की अपेक्षा विकार वश क्षुब्ध हो जाता है।

साम गान से यजमान को पुरुषार्थ चतुष्टय रुप फल की भी प्राप्ति होती है।

साम गान की स्वर गणना अत्यन्त वैज्ञानिक एवं सुसम्बद्ध है।

सामवेद से ही संगीत शास्त्र का अवतरण हुआ है। साम गान मुख्य रुप से प्रकृति एवं विकृति रुप से दो प्रकार का है। प्रकृतिगान सामवेद के पूर्वार्चिक से सम्बन्धित है जिसमें ग्रामगेयगान, एवं अरण्यगेय गान आते हैं।

विकृति गान के अन्तर्गत मुख्य रुप से ऊहगान, और ऊह्यगान आते हैं जिसका गान उत्तरार्चिक के क्रतु के अनुसार विभाजित सप्त पर्वों के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। उत्तरार्चिक के सप्तपर्व का नाम दशरात्र, सम्वत्सर, एकाह, अहीन सत्र, प्रायश्चित्त और क्षुद्र है।

प्रकृति गान की साम संख्या १४९४ और विकृति गान की साम संख्या ११४५ है। इस प्रकार सामवेद की साम गान संख्या २६३६ है।

साम संहिता के समस्त गान भिन्न भिन्न हैं इसका प्रमुख कारण यह है कि एक ऋचा पर भिन्न भिन्न ऋषियों द्वारा दृष्ट साम भिन्न-भिन्न हैं। कतिपय ऋचाओं पर साम गान का सर्वथा अभाव है। सामगान हीन ऋचाएं उत्तरार्चिक में अत्यल्प हैं कुछ ऋचाएँ ऐसी हैं जिनमें प्रकृति एवं विकृति दोनों प्रकार के गान प्राप्त होते हैं। एक ऋचा पर सबसे बड़ी साम संख्या ६१ है तत्पश्चात ५९ और ४९ है। २५ साम गान वाली ऋचाएं तो संख्या में अनेक हैं। उत्तरार्चिक से सम्बन्धित ऋचाओं का गान स्तोमानुसार होता है। स्तोम ९ प्रकार के हैं। त्रिवृत, पंचदश, सप्तदश, एकविंश, त्रिणव त्रयास्त्रिंश, चतुर्विंश, चतुश्चत्वारिंश और अष्ट चत्वारिंश। इन सामों से एक एक साम तृच अर्थात तीन ऋचाओं पर गाया जाता है। इन तृचों की तीन पर्यायों में गति है। और प्रत्येक पर्याय में तृचों पर साम के गान की आवृत्ति का नियम रहता है। इस प्रकार तृतीय पर्याय में स्तोम का स्वरुप सम्पन्न होता है। इस आवृत्ति जन्म गान के प्रकार को विष्टुति

विशेषगान कहते हैं । इन नवस्तोत्रों की विष्टुतियां २८ प्रकार की हैं ।

साम गान के विभिन्न स्वरों में विभिन्न देवता, चर, अचर, जीवन धारण कर आनन्दित होते हैं जैसा कि नारदीय शिक्षा और साम विधान ब्राह्मण में प्रतिपादित हैं कि प्रजापति ने इस सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति की और साम गान ने उसे जीवन प्रदान किया यह सब प्रक्रिया वैज्ञानिक ही है। साम के क्रुष्ट स्वर से देवताओं ने जीवन धारण किया । प्रथम स्वर से मनुष्य द्वितीय स्वर से गन्धर्व और अप्सरा तृतीय स्वर से पशु राक्षस तथा अति स्वार्य से वनस्पति औषधि तशा अन्य जीवन जगत् आदि आनन्दित होता है ।

-हरिगोपाल शर्मा
फतेहबाद रोड, पोस्ट बरदौस कटार
आगरा - २८२००३ (उ.प्र)